मानस में पर्यावरणीय विवेचन

डॉ. रेखा पाण्डेय

एसो0 प्रो0, दर्शनशास्त्र विभाग,
भगवानदीन आर्यकन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लखीमपुर–खीरी

सारांश :

गोस्वामी तुलसीदास कृत अनुपम श्रीरामचरितमानस केवल एक धार्मिक महाकाव्य नहीं, बल्कि सामाजिक, नैतिक, एवं पर्यावरणीय चेतना से परिपूर्ण ग्रंथ भी है। इसमें प्रकृति, पर्यावरण एवं जैव विविधता के महत्व को बड़े ही सुंदर एवं मार्मिक रूप में प्रस्तुत किया गया है। वर्तमान समय में जब पर्यावरणीय असंतुलन, जलवायु परिवर्तन और जैव–विविधता के संकट गहरे होते जा रहे हैं, तब रामचरितमानस में उल्लिखित पर्यावरणीय दृष्टिकोण अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है।इस ग्रंथ में वन, वृक्ष, नदियाँ, पर्वत, पशु–पक्षी आदि के प्रति आदर एवं संरक्षण का भाव निहित है। श्रीराम का वनगमन केवल एक धार्मिक यात्रा नहीं, बल्कि प्रकृति और मानव के सामंजस्य का प्रतीक भी है। चित्रकूट, दंडकारण्य, पंचवटी आदि वनों का वर्णन इस तथ्य को पुष्ट करता है कि प्राचीन भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण एक महत्त्वपूर्ण तत्व था। तुलसीदास ने विभिन्न प्रसंगों में प्रकृति के साथ संतुलन बनाए रखने की बात कही है, जैसे केवट प्रसंग, शबरी आश्रम, हनुमान द्वारा संजीवनी बूटी लाना आदि। वर्तमान संदर्भ में, जब पर्यावरण प्रदूषण, वनों की कटाई एवं जल संकट जैसी समस्याएँ चरम पर हैं, तब रामचरितमानस का संदेश हमें प्रकृति के साथ सह–अस्तित्व की प्रेरणा देता है। इस ग्रंथ के अध्ययन से हमें यह सीख मिलती है कि हमें न केवल प्राकृतिक संसाधनों का सदुपयोग करना चाहिए, बल्कि उनकी रक्षा एवं संवर्धन की भी जिम्मेदारी उठानी चाहिए। इस प्रकार रामचरितमानस की पर्यावरणीय चेतना आधुनिक पर्यावरणीय आंदोलनों के लिए भी एक प्रेरणा स्रोत बन सकती है।

मुख्य शब्दः रामचरितमानस, पर्यावरणीय चेतना, तुलसीदास, वन संरक्षण, जैव विविधता, जलवायु परिवर्तन, प्रकृति, आधुनिक संदर्भ, सतत विकास।

चतुर्दिश अवलोकन करने पर जो कुछ दृष्टिगोचर होता है वह सब पर्यावरण के अन्तर्गत आता है। पर्यावारण अनेक अवयवों से मिलकर बना है। स्थूल दृष्टि से अध्यात्म में इसे जड़ और चेतन कहा गया है तथा आधुनिक वैज्ञानिकों ने इसे ही जैविक और अजैविक कहा है। प्रकृति में विद्यमान जैविक तथा अजैविक घटक मिलकर पर्यावरण का निर्माण करते हैं। अजैविक या भौतिक घटकों में स्थल, वायु, जल, मृदा आदि महत्वपूण हैं, क्योंकि यह जीव मण्डल के विभिन्न जीवों को आधार प्रदान करने के साथ में उनके विकास हेतु अनुकूल दशायें उत्पन्न करते हैं।

भारत में पर्यावरण संरक्षण और प्रकृति प्रेम की जड़ें बहुत गहरी हैं। मानव–जीवन को सुखमय बनाये रखने के लिए पर्यावरण को सन्तुलित, संरक्षित व समृद्धवान बनाये रखना नितान्त आवश्यक है। इसी को ध्यान में रखते हुए गोस्वामी तुलसीदास जी ने मानस के महानायक को पर्यावरण में प्रयुक्त समस्त घटकों यथा, पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश के अतिरिक्त नदियों, पर्वतों, वनों, पशु–पक्षियों आदि समग्र तत्वों के प्रति आदर व्यक्त करते हुए दिखाने का प्रयास किया है। भारतीय संस्कृति की पर्यावरणीय विरासत के प्रति समाज में जागरूकता पैदा करना मानसकार का लक्ष्य प्रतीत होता है। श्रीराम का सम्पूर्ण जीवन प्रकृति के साथ जोड़कर मानसकार ने हमें भी उसके साथ–साथ चलने का संकेत दिया है।

प्रकृति एवं पर्यावरण भारतीय संस्कृति एवं दर्शन के मूलभूत अंग रहे हैं। भारतीय ग्रंथों में पर्यावरण के महत्व को व्यापक रूप से स्वीकार किया गया है, और इसका संरक्षण एक नैतिक दायित्व माना गया है। गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस में समाज, राजनीति, नैतिकता और पर्यावरणीय चेतना के गहन संदर्भ उपलब्ध हैं। इसमें प्रकृति को एक जीवंत तत्व के रूप में चित्रित किया गया है, जिसमें नदियाँ, वृक्ष, वन, पर्वत, पशु–पक्षी आदि सभी का महत्वपूर्ण स्थान है। वर्तमान समय में जब वैश्विक स्तर पर पर्यावरणीय संकट, जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, जल प्रदूषण एवं जैव

विविधता के ह्रास जैसी समस्याएँ विकराल रूप धारण कर रही हैं, तब रामचरितमानस में निहित पर्यावरणीय संदेश अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है।

रामचरितमानस में पर्यावरणीय चेतना : रामचरितमानसमें पर्यावरण के प्रति सम्मान एवं संरक्षण की भावना स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है। श्रीराम का वनगमन केवल एक धार्मिक या राजनैतिक घटना नहीं थी, बल्कि यह प्रकृति एवं मानव के सामंजस्य को भी दर्शाता है। तुलसीदासजी ने वनों, नदियों, पर्वतों, पशु–पक्षियों आदि का वर्णन बहुत ही भावनात्मक और सारगर्भित तरीके से किया है, जो यह दर्शाता है कि प्रकृति केवल जीवनयापन का साधन नहीं, बल्कि पूजनीय और संरक्षित किए जाने योग्य धरोहर भी है।

1. वन तथा वन्य जीव : रामचरितमानस में अयोध्या, चित्रकूट, दंडकारण्य, पंचवटी, और लंका आदि अनेक स्थानों का उल्लेख मिलता है, जिनमें अधिकांश स्थान प्राकृतिक वातावरण से घिरे हुए थे। जिस स्थान पर घास, शाक, गुल्म, लता–बल्लरियों, वृक्ष एवं वनस्पतियों का साथ–साथ स्वाभाविक उद्‌भव होता है। उन स्थानों को वन कहा जाता है। श्रीराम का वनवास वास्तव में प्रकृति के संरक्षण का संदेश देता है। उनके जीवन का महत्वपूर्ण समय वनों में व्यतीत हुआ।

एहि बिधि सिय समेत दोउ भाई। बसहिं बिपिन सुर मुनि सुखदाई।। (अयो0 का0 136,4)

सो बनु सैलु सुभायँ सुहावन। (अयो0 का0 138, 3)

दंडक बन पुनीत प्रभु करहू (अरण्य का0 12, 16)

प्राचीन भारतीय संस्कृति में वनों का विशेष महत्व था। तुलसीदासजी कहते हैं– देखत बन सर सैल सुहाए (अयो0 का0 123, 5)

वनों के साथ ही वन्य–जीव पर्यावरण के प्रमुख अंग हैं। मानस में वन्य–जीवों के प्रति विशेष रूप से संवेदना प्रकट की गई है। वानर, भालू, मृग, मोर आदि जीवों को पारस्थितिकी सन्तुलन के लिए महत्वपूर्ण माना गया है। वन तथा वन के जीव–जन्तुओं, औषधियों तथा वनस्पतियों का पारिस्थितिकी चक्र के सन्तुलन में योगदान तथा मानवीय उपकार का निदर्शन मानस में अनेक स्थलों पर उपलब्ध होता है। वन तथा वन्य–जीवों की अतीत से ही अर्थ व्यवस्था में ही महती भूमिका रही है। इस प्रकार प्रकृति का सौंदर्य केवल आँखों के लिए आनंददायक ही नहीं, बल्कि यह आर्थिक, मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति का साधन भी है।

2. नदियां एवं जल स्रोत : नदियां पर्यावरण का प्रमुख अंग हैं। रामचरितमानस में गंगा, यमुना, सरयू, गोदावरी, मंदाकिनी आदि नदियों का उल्लेख मिलता है, जो यह दर्शाता है कि जल संसाधनों को पवित्र और पूजनीय माना जाता था।

सुरसर सरसइ दिनकर कन्या । मेकल सुता गोदावरि धन्या ।। (अयो0 का0 137,4)

श्रीराम के जीवन में गंगा और सरयू का विशेष स्थान था। गंगा का पवित्र जल पथिक की थकान दूर कर उसे सुख प्रदान करने वाला है।

गंग सकल मुद मंगल मूला । सब सुख करनि हरनि सब सूला ।। (अयो0 का0 86,4)

उतरे राम देवसरि देखी । कीन्ह दंडवत हरषु विसेषी।। (अयो0 का0 86,2)

सरयू का पवित्र और निर्मल जल आस–पास के वातावरण को शुद्ध करते हुए प्रवाहित होता है– बहइ सुहावन त्रिविध समीरा। भई सरजू अति निर्मल नीरा।।

इसी प्रकार मन्दाकिनी के बारे में कहा गया है–सुरसरि धार नाउँ मंदाकिनि (अयो0का0 131,6)

सब सर सिंधु नदीं नद नाना। मंदाकिनि कर करहिं बखाना (अयो0का0 137,5)

इस प्रकार मानस में नदियों को केवल जल स्रोत नहीं, बल्कि जीवनदायिनी शक्ति के रूप में देखा गया है। इसका संदेश है कि जल संसाधनों को स्वच्छ और सुरक्षित रखना अनिवार्य है।

3. पशु–पक्षियों के प्रति संवेदनाः रामचरितमानस में पशु–पक्षियों का विशेष उल्लेख मिलता है। श्रीराम की वानर और रीछ सेना पर्यावरणीय सह–अस्तित्व का उदाहरण प्रस्तुत करती है।

नाना बरन भालु कपि धारी (सुन्दर का0 53, 6)

सहज सूर कपि भालु सब पुनि सिर पर प्रभुराम (सुन्दर का0 दोहा 55)

पक्षियों का वर्णन इस प्रकार किया गया है–

खंजन सुक कपोत मृग मीना। मधुप निकर कोकिला प्रबीना ।। (अरण्य काण्ड 29,10)

नीलकण्ठ, कलकण्ठ सुक चातक चक्क चकोर

भांति–भांति बोलहिं बिहग श्रवन सुखद चित चोर।। (अयो0का0 दोहा 137)

जटायु, जो एक गिद्ध था, रामकथा में नायक की भूमिका निभाता है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि उस समय समाज में पशु–पक्षियों के प्रति संवेदनशीलता थी। यह संदेश वर्तमान में भी प्रासंगिक है, जहाँ पशु संरक्षण एक गंभीर चुनौती बन चुका है।

4. वृक्ष : रामचरितमानस में वृक्षों को विशेष सम्मान दिया गया है। तुलसीदास ने अनेक स्थलों पर वृक्षों को आश्रय, छाया, फल–फूल देने वाले और जीवनदायिनी बताया है। उदाहरणस्वरूप, जब श्रीराम चित्रकूट में निवास करते हैं, तो वहाँ की प्राकृतिक शोभा का उल्लेख मिलता है– तरूवरबहु बिधि सुफल सुहाए। केहि कहुँ बिदित नहिं चित्रकूटाए।। (अरण्य काण्ड, दोहा 15)

नाथ देखिअहिं बिटप बिसाला। पाकरि जंबु रसाल तमाला ।। (अयो0का0 236, 2)

तुलसी तरूबर बिबिध सुहाए (अयो0का0 236, 7)

अनेक ऐसे वृक्षों का उल्लेख मानस में प्राप्त होता है जो औषधीय गुणों वाले हैं तथा मनुष्य के रोग निवारणार्थ काम में आते हैं। इसके अतिरिक्त वृक्ष पर्वतों को दृढ़ता से थामें रखते हैं, तूफानी वर्षा को दबाते है, नदियों को अनुशासन में रखते हैं तथा समस्त जीवों का पोषणकर पर्यावरण को सुखद, शीतल व निरोग बनाने का कार्य करते हैं। यही कारण है कि भारतीय सांस्कृतिक परम्परा में वट, पीपल, शमी, तुलसी, आंवला आदि अनेक वृक्षों को पूजा से जोड़ा गया है। ये वृक्ष पर्यावरण को शुद्ध करने में अपनी अहम भूमिका निभाते हैं। इसलिए वृक्षारोपण और वनों की रक्षा करना हमारा दायित्व है।

वर्तमान संदर्भ में पर्यावरणीय चेतना का महत्व : आज के परिप्रेक्ष्य में पर्यावरणीय असंतुलन, जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक आपदाएँ, वनों की कटाई, जल संकट और प्रदूषण जैसी समस्याएँ गंभीर होती जा रही हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिए यदि हम रामचरितमानस में वर्णित पर्यावरणीय संदेशों को अपनाएँ, तो एक स्थायी एवं संतुलित पर्यावरण की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

1. वन संरक्षणः आधुनिक युग में औद्योगीकरण और शहरीकरण के कारण वन क्षेत्र तेजी से घट रहे हैं। रामचरितमानस में वनों की महत्ता को देखते हुए हमें वनों के संरक्षण की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। वृक्षारोपण को बढ़ावा देना, अवैध कटाई रोकना, और वन्यजीवों की रक्षा करना इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हो सकते हैं।

2. जल संरक्षणः नदियों और जल स्रोतों का प्रदूषण एक विकराल समस्या बन चुका है। नदियों को 'माँ' कहा गया है। हमारी अस्तित्व की रक्षक यह नदियां आबादी के मल–मूत्र, कूड़ा–कचरा, शव–विसर्जन, कल–करखानों के अपशिष्ट के

कारण प्रदूषित हो गयी हैं। रामचरित मानस में नदियों के प्रति पूज्य भाव व्यक्त कर उन्हे शुद्ध रखने का संदेश दिया गया है। रामचरितमानस में वर्णित जल स्रोतों की पवित्रता का संदेश आज भी उतना ही महत्वपूर्ण है। जल संरक्षण हेतु स्वच्छता अभियान, जल संचयन और अपशिष्ट प्रबंधन पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

3. जैव विविधता की रक्षा : जैव विविधता के संरक्षण की आवश्यकता को रामचरितमानस में विभिन्न रूपों में प्रस्तुत किया गया है। आधुनिक समय में हमें वन्यजीवों की सुरक्षा, उनके

प्राकृतिक आवास की रक्षा और अवैध शिकार को रोकने के लिए कठोर कदम उठाने चाहिए।

4. सतत विकासः रामचरितमानस का संदेश संतुलित जीवन और सह–अस्तित्व पर आधारित है। आधुनिक औद्योगिक एवं तकनीकी विकास के साथ–साथ हमें यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारा पर्यावरण सुरक्षित रहे। स्थायी कृषि, पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक तकनीकों के समन्वय से सतत विकास संभव है।

रामचरितमानस में प्रकृति का अत्यंत व्यापक और सजीव चित्रण मिलता है। गोस्वामी तुलसीदास पृथ्वी, वायु, अग्नि, आकाश, पर्वत, नदियाँ, वृक्षों के अतिरिक्त सरोवरों, कन्द–मूल, फल, पुष्प, पशु–पक्षी, वन तथा वन्य जीवों के साथ ही श्रीराम का आत्मीयतापूर्ण सम्बन्ध जोड़कर हम सब को प्रकृति के साथ एक रिश्ता बनाने की शिक्षा देते हैं।

प्रकृति से प्राप्त संसाधन केवल भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नहीं, बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक संतोष के लिए भी आवश्यक हैं। वनवास काल में भगवान श्रीराम, सीता और लक्ष्मण का प्राकृतिक परिवेश में रहना यह इंगित करता है कि मनुष्य और प्रकृति के बीच गहरा संबंध होना चाहिए।

वनों का संरक्षण रामचरितमानस में अत्यंत महत्वपूर्ण विषय के रूप में प्रस्तुत किया गया है। अयोध्या के सुखद वातावरण के बावजूद श्रीराम, सीता और लक्ष्मण का वनगमन इस बात को रेखांकित करता है कि वन केवल रहने योग्य ही नहीं, बल्कि तपस्या, ध्यान और आत्मशुद्धि के लिए भी उपयुक्त हैं।

प्रकृति में सौंदर्य और शांति दोनों ही विद्यमान है, आधुनिक संदर्भ में यह संदेश अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि तेजी से बढ़ते शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के कारण प्राकृतिक संसाधनों का विनाश हो रहा है। ऐसे समय में रामचरितमानस यह संदेश देता है कि प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण केवल मानव–जाति के लिए ही नहीं, बल्कि समस्त जीव–जंतुओं के अस्तित्व के लिए भी आवश्यक है।

नदियों को रामचरितमानस में पवित्र एवं जीवनदायिनी माना गया है। गंगा, यमुना, सरयू, मंदाकिनी और गोदावरी जैसी नदियों का वर्णन कई स्थलों पर मिलता है। नदियाँ केवल जल का स्रोत ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और आध्यात्मिक चेतना की संवाहक भी हैं। वर्तमान समय में जब जल संकट एक गंभीर समस्या बन चुका है, तब रामचरितमानस में जल संरक्षण के लिए दिया गया यह संदेश अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। जल के दुरुपयोग और प्रदूषण को रोकने के लिए हमें प्राचीन भारतीय ग्रंथों में वर्णित जल–संरक्षण पद्धतियों को अपनाना चाहिए।

वृक्षों को रामचरितमानस में अत्यधिक महत्व दिया गया है। श्रीराम के वनगमन के दौरान विभिन्न वृक्षों का उल्लेख किया गया है, जो उनकी उपयोगिता और पवित्रता को दर्शाते हैं। वृक्ष केवल पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने के लिए ही नहीं, बल्कि आर्थिक और सामाजिक समृद्धि के लिए भी आवश्यक हैं। वृक्षारोपण को धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं से जोड़कर समाज में पर्यावरण संरक्षण की भावना को बढ़ावा दिया जा सकता है।

रामचरितमानस में मानव और प्रकृति के सह–अस्तित्व पर बल दिया गया है। तुलसीदास ने अनेक स्थलों पर दर्शाया है कि जब मनुष्य प्रकृति का सम्मान करता है, तब उसे समृद्धि और शांति प्राप्त होती है। रावण का विनाश और रामराज्य की स्थापना इस बात का प्रतीक है। यदि हम प्रकृति के सहयोगी बनेंगे तो वह भी हमारी सहयोगी बनेगी। जैसा कि वन गमन के समय सीता–राम के प्रति प्रकृति का व्यवहार देखने में आता है–

छाँह करहिं घन' (अयो0 का0 दोहा 113)

जब ते आइ रहे रघुनायक। तब तें भयऊ बनु मंगलदायकु (अयो0 का0 136, 5)

आज के युग में जब पर्यावरणीय असंतुलन बढ़ता जा रहा है, तब हमें प्राचीन ग्रंथों से प्रेरणा लेकर प्रकृति के प्रति अपनी संवेदनशीलता को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है। तुलसीदास ने रामचरितमानस में न केवल धार्मिक और नैतिक मूल्यों को प्रस्तुत किया है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण का व्यावहारिक दृष्टिकोण भी प्रदान किया है। यदि रामचरितमानस में दिए गए पर्यावरणीय संदेशों को अपनाया जाए, तो जलवायु परिवर्तन, जल संकट, वनों की कटाई और जैव विविधता की हानि जैसी समस्याओं का समाधान खोजा जा सकता है। जलवायु परिवर्तन आज विश्वभर में एक गंभीर समस्या बन चुकी है, जिसका मुख्य कारण मानवजनित गतिविधियाँ जैसे अत्यधिक औद्योगिकीकरण, वनों की कटाई और प्रदूषण हैं। तुलसीदास ने अपने ग्रंथों में पहले ही चेतावनी दी थी कि जब मनुष्य अपने स्वार्थ में

प्रकृति का दोहन करता है, तो इसका दुष्परिणाम प्राकृतिक आपदाओं के रूप में सामने आता है।

जब मनुष्य अधर्म और पापों में लिप्त हो जाता है, तो प्रकृति का संतुलन बिगड़ जाता है और भीषण आपदाएँ जन्म लेती हैं। वर्तमान में अत्यधिक कार्बन उत्सर्जन, जीवाश्म ईंधन का अधिक उपयोग और ग्रीनहाउस प्रभाव के कारण जलवायु परिवर्तन का खतरा बढ़ता जा रहा है, जिसके परिणाम स्वरूप ग्लेशियर पिघल रहे हैं, समुद्र का जलस्तर बढ़ रहा है और अनियमित मौसमी बदलाव देखने को मिल रहे हैं।

आधुनिक समय में, वनों की कटाई के कारण न केवल जलवायु परिवर्तन की गति बढ़ रही है, बल्कि जैव विविधता भी संकट में पड़ रही है, जिससे अनेक प्रजातियाँ विलुप्ति की कगार पर हैं। वन केवल लकड़ी और अन्य संसाधनों का स्रोत नहीं, बल्कि संपूर्ण पारिस्थितिक तंत्र का आधार हैं, इसलिए वृक्षारोपण को बढ़ावा देना और वनों की रक्षा करना अत्यंत आवश्यक है। वृक्ष केवल पर्यावरण का संतुलन बनाए रखने का साधन ही नहीं, बल्कि समाज की संपन्नता और कल्याण का भी स्रोत हैं। आज के संदर्भ में वृक्षारोपण अभियानों को गति देना आवश्यक है, जिससे न केवल वायु शुद्ध होगी, बल्कि जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों का सामना भी किया जा सकेगा।

जल संकट और जल प्रदूषण भी वर्तमान युग की बड़ी समस्याएँ हैं, जिनका समाधान खोजे बिना सतत विकास संभव नहीं है। रामचरितमानस में जल को पवित्रता और जीवन का स्रोत बताया गया है, जैसे कि उत्तरकाण्ड में उल्लेख है। ''मंदाकिनि जेहि धारु नहाई। सिधि समस्त लहहि सब भाई।।'' अर्थात् जल का शुद्ध और संरक्षित रहना आवश्यक है, क्योंकि यह मानव जीवन और प्रकृति की निरंतरता के लिए अनिवार्य तत्व है। आधुनिक संदर्भ में, जल स्रोतों का अत्यधिक दोहन, नदियों और झीलों का प्रदूषण तथा भूजल स्तर में गिरावट जैसी समस्याएँ गहरी चिंता का विषय बन चुकी हैं। जल संरक्षण के लिए वर्षा जल संचयन, अपशिष्ट जल प्रबंधन और जल की बर्बादी को रोकने के उपाय अपनाने होंगे। तुलसीदास का यह संदेश आज भी प्रासंगिक है कि प्रकृति का संरक्षण केवल पर्यावरणीय संतुलन के लिए ही नहीं, बल्कि मानव समाज के कल्याण और भविष्य की स्थिरता के लिए भी आवश्यक है। यदि हम जल, जंगल और जीवन के इस संबंध को समझते हुए अपने संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करें, तो जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई और जल संकट जैसी समस्याओं का समाधान किया जा सकता है और एक संतुलित तथा समृद्ध पर्यावरण की स्थापना की जा सकती है।

पर्यावरण संरक्षण की भावना समाज में जागृत करने के लिए वृक्षारोपण, जल संरक्षण और हरित ऊर्जा को अपनाने की आवश्यकता है, जिससे न केवल प्रकृति संरक्षित होगी, बल्कि समाज की समृद्धि भी सुनिश्चित होगी। जल संरक्षण भी पर्यावरण सुरक्षा का एक महत्वपूर्ण अंग है, क्योंकि जल ही जीवन का आधार है और यदि हम जल स्रोतों का उचित प्रबंधन नहीं करेंगे, तो आने वाली पीढ़ियों को गंभीर जल संकट का सामना करना पड़ेगा। इसी तरह, पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों के अत्यधिक उपयोग से उत्पन्न प्रदूषण को रोकने के लिए हरित ऊर्जा जैसे सौर और पवन ऊर्जा को बढ़ावा देना अनिवार्य हो गया है। समाज को पर्यावरण के प्रति जागरूक करने के लिए शिक्षा, मीडिया और सामाजिक आंदोलनों की भूमिका महत्वपूर्ण है। तुलसीदास ने लोक चेतना और नैतिकता पर विशेष बल देते हुए कहा है कि–

'परहित सरिस धरम नहिं भाई। परपीड़ा सम नहिं अधमाई।।'' (उत्तरकाण्ड) जिसका अभिप्राय है कि दूसरों की भलाई करना सबसे बड़ा धर्म है और दूसरों को कष्ट देना सबसे बड़ा अधर्म। इसी विचारधारा को आधुनिक संदर्भ में अपनाकर

प्रकृति के प्रति उदार भाव रखा जा सकता है। आज पर्यावरण जागरूकता अभियान चलाये जा रहे हैं लेकिन इसके साथ ही आवश्यकता है कि स्कूलों और कॉलेजों में पर्यावरण शिक्षा को अनिवार्य बनाया जाए, वृक्षारोपण कार्यक्रमों में सामुदायिक भागीदारी सुनिश्चित की जाए, और मीडिया के माध्यम से लोगों को पर्यावरणीय संकटों के प्रति सचेत किया जाए। सोशल मीडिया, समाचार पत्र, टेलीविजन और रेडियो जैसे साधनों के द्वारा व्यापक स्तर पर पर्यावरण चेतना को बढ़ावा दिया जा सकता है। साथ ही, गैर–सरकारी संगठनों और सरकारी योजनाओं के सहयोग से लोगों को प्रोत्साहित किया जा सकता है कि वे अपने दैनिक जीवन में छोटे–छोटे बदलाव लाकर पर्यावरण संरक्षण में योगदान दें, जैसे कि प्लास्टिक का कम से कम उपयोग, जल और ऊर्जा का संरक्षण, जैविक खेती को बढ़ावा देना तथा पुनर्चक्रण (रिसाइकलिंग) को अपनाना। पर्यावरण संरक्षण की दिशा में किए गए छोटे–छोटे प्रयास दीर्घकालिक रूप से बड़े बदलाव ला सकते हैं और समाज को अधिक समृद्ध बना सकते हैं। यदि प्रत्येक नागरिक पर्यावरण की रक्षा को अपनी जिम्मेदारी समझे और तुलसीदास की शिक्षाओं को व्यवहारिक रूप में अपनाए, तो निश्चित रूप से हम अपनी धरती को सुरक्षित और सुंदर बना सकते हैं।

निष्कर्ष :

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि प्रकृति का एक–एक घटक पर्यावरण संरक्षण में सहयोगी माना गया है। उदाहरणार्थ गिद्ध, केचुआ आदि जीव। गिद्ध मृत पशुओं का भक्षण कर वातावरण को दूषित होने से बचाते हैं। केचुआ भूमि को उपजाऊ बनाने में अहम भूमिका निभाता है।। शीतल छाया, पक्षियों के आश्रय, पथिकों को विश्रान्ति देने वाले वृक्षों जैसे कि पीपल, बरगद, नीम, आम, आंवला, चन्दन तथा तुलसी जैसे पौधों की उपयोगिता आज वैज्ञानिक भी मान रहे हैं।मानस में ऋषि–मुनियों के आश्रम पेंड़–पौधों से घिरे हुए दर्शाये गये हैं। प्रतिदिन यज्ञादि धर्म–कर्म में पूजा के लिए प्रयुक्त फल, फूल, पत्र, दूर्वा आदि का प्रयोग पर्यावरण सुरक्षा के प्रति सजगता का परिचय देना है। मानस में पशु–पक्षियों को बहुत महत्व दिया गया है। सिंह, वृषभ, मयूर, अश्व, उल्लू आदि देवी–देवताओं के वाहन हैं। सर्प शंकर जी का आभूषण है। सर्प चुहों को खाकर कृषि की रक्षा करता है। गाय में तैंतीस करोड़ देवता निवास करते हैं। गाय का दुग्ध अमृत है। गोबर से लेकर गो–मूत्र की उपयोगिता आज सिद्ध हो चुकी है। पृथ्वी को बंजर होने से बचाने के लिए रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग बन्द करके गोबर की खाद का प्रयोग स्वास्थ्य के लिए लाभकारी माना जा रहा है। इन सबके पीछे पर्यावरण संचेतना ही प्रकट होती है। हंस, काक, गरूण तथा भालू, बन्दर आदि जीवों का मानवीयकरण करके उनको प्रस्तुत करने के पीछे प्रकृति के समस्त घटकों को महत्व देने का भाव दिखाई देता है। पर्यावरण सन्तुलन की दृष्टि से प्रकृति का कोई भी घटक कम महत्वपूर्ण नहीं है। भोगवादी प्रवृत्ति तथा पाश्चात्य संस्कृति के नशे में चूर कुछ लोग उपर्युक्त बातों के पीछे के मर्म को न समझने के कारण इन्हे महत्वहीन बताते हैं। जबकि सच्चाई यह है कि यदि प्रृथ्वी को जीवन शून्य नहीं करना है तो प्रकृति के एक–एक तत्व को देवी–देवता के रूप में स्थापित करके उनका संरक्षण करना होगा। पर्यावरण को बचाना हम सबकी नैतिक जिम्मेदारी है।

अंत में कह सकते हैं कि रामचरितमानस केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण का भी प्रेरणास्रोत है। तुलसीदास ने इस महाकाव्य में प्रकृति के विभिन्न घटकों वन, नदियाँ, पशु–पक्षी, पर्वत और ऋतुओं का सूक्ष्म और सुंदर वर्णन किया है। उन्होंने न केवल इन प्राकृतिक तत्वों की महिमा गाई, बल्कि यह भी दर्शाया कि इनका संतुलन बनाए रखना मानव समाज के लिए कितना आवश्यक है।रामचरितमानसमें नदियों को जीवनदायिनी, वनों को आत्मशुद्धि और शांति का केंद्र तथा पशु–पक्षियों को प्राकृतिक सौंदर्य और संतुलन का अभिन्न अंग बताया गया है। तुलसीदास का यह दृष्टिकोण आज के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है, जब जलवायु परिवर्तन, जल संकट, वनों की कटाई और जैव विविधता के ह्रास जैसी समस्याएँ विकराल रूप ले चुकी हैं। आधुनिक समय में जब प्रकृति का अंधाधुंध दोहन हो रहा है, तब रामचरितमानस का संदेश हमें प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनने की प्रेरणा देता है। समाज में पर्यावरण संरक्षण की भावना जागृत करने के लिए आवश्यक है कि लोग तुलसीदास के संदेशों को समझें और उनके अनुसार आचरण करें। यदि हम रामचरितमानस में निहित पर्यावरणीय चेतना को अपने जीवन में अपनाएँ, तो सतत विकास और पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखना संभव हो सकता है। वृक्षारोपण, जल संरक्षण, जैव विविधता की रक्षा और प्रकृति के प्रति कृतज्ञता जैसे मूल्यों को अपनाकर हम न केवल पर्यावरण का संरक्षण कर सकते हैं, बल्कि भावी पीढ़ियों के लिए एक स्वच्छ और संतुलित संसार की नींव भी रख सकते हैं।

सहायक ग्रन्थ सूची–

1. गोयल, डा. एम.के., पर्यावरण शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा

2. शर्मा, पं0 खेमराम एवं शर्मा, पं0 ब्रजराज, पर्यावरण अध्ययन शिक्षण (भौतिक एवं जैविक पर्यावरण), अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा

3. रस्तोगी, वीर बाला, पर्यावरण विज्ञान एवं आविषालुता विज्ञान, केदारनाथ, रामनाथ, मेरठ।

4. त्रिपाठी, डा. दयाशंकर, पर्यावरण्ध अध्ययन, मोती लाल बनारसीदास, दिल्ली

5. पर्यावरण विधि, इलाहाबाद लॉ पब्लिकेशन्स

6. मिश्र, एस. (2010). रामचरितमानस में प्राकृतिक संरचना और आधुनिक संदर्भ, नई दिल्ली–विद्या निकेतन।

7. जोशी, वी. (2019). पारंपरिक भारतीय समाज में प्रकृति संरक्षण की भूमिका. पुणे– लोक संस्कृति प्रकाशन।